

কবিতাঃ

তিন পাহাড়ের কোলেঃ
শক্তি চৌধুরীঃ

Date: 20/5/20

শব্দার্থ ও টীকাঃ

- তিনপাহাড় = তিন যে পাহাড়,
- হৃদয়বিলাসী = হৃদয় বিলাস ঘাহেয়।
- তিনজুড়া = ছিটে,
- আর্দ্রতা = তান স্নেহ = স্নেহ আবদ্ধ হন,
- জনমানবহীন = লোকজন শূন্য,
- সঞ্চাল = প্রত্যবে,
- বনভূমি = অরণ্য,
- প্রপাত = অরণ্য পাত,
- মানবহীন হ'য় = মানবহীন কণা হ'য় (শূন্য),
- ফুলের ফাটল = ফিটফিট করে,
- আলোর ছোঁচটা খোলে = পূর্ব আকাশের দীর্ঘ দীর্ঘ সঞ্চাল হ'য়
- ছাঁচাৎ = আবদ্ধ স্থান,
- কলয় = দেয়,
- নকশা কাথা = নকশা ব'য়ে কাঁথায়;

ব্যঞ্জিতার্থঃ

কবি শক্তি চৌধুরী 'তিনপাহাড়ের কোলে' কবিতায় নকশিত
কবিতার সূত্রিক আনন্দ সূত্র গোছন, শব্দে কবিতার
ব্যঙ্গতা, ছিত্রের সৌন্দর্য হৃদয় বিলাসী তিন যুবক
কবিতা রচন তিনপাহাড়, প্রেমানন্দ হৃদয় ছিত্রের মত
সূত্রিক মানবহীন, নির্জনতা প্রেমে সৌন্দর্যের আবহ
নির্জন করে,

তিন পাহাড়ের কোলে নির্জন অরণ্যে কোন
কিছির পথ নেই, তাই কোন স্থানের পথ তৈরি
করে নেওয়া সম্ভব, কবিতা, টিলি, পাহাড়ের সূত্র হিঙ্গ
প্রাই অজানা পথ, কবি কল্পনা করেন বনভূমির
পথ প্রেমে সমাপ্ত হ'য়েছে, প্রেমে প্রেমেই শুরু

স্মরণার্থে সাজিয়ে রাখলে মুখ যখন তার নাম
 ঘোষণা খোলে, তখনই প্রতিভাত হয় চোখের
 স্মরণে সাজিয়ে রাখলে মুখ শান্তি পাবে যখন তিন-
 পাখির মতো উড়বে, উড়বে তখন তিন
 শিরের কলসের মতো মনে হয় শান্তির বসন
 ঘুটিয়ে না এলে সাজিয়ে রাখলে তিনের তিন
 মনে আসবে না।

নাগরিকের আশ্রয়

স্মরণে নাগরিকের প্রতি আতি স্নেহজনক বিষয়, নাগরিকের
 স্মরণে পটভূমি সাজিয়ে রাখলে আশ্রয় পাবে
 এতে, তাই নাগরিকের আশ্রয় মিনা তা দেখা দেবে,
 কবি তিন পাখির মতো উড়বে, উড়বে
 ফুলের মতো সুন্দর আনন্দে মুগ্ধ হয়ে পড়বে, শহরে
 জীবনের শ্রুতি, উড়বে উড়বে আশ্রয় মিনা তা তিন
 সুবন্ধে পড়বে তিন পাখির মতো উড়বে, উড়বে
 ছবিতে মতো সুন্দর, নির্জনতা দেখলে আশ্রয়
 নির্মান করে, দেখলে কোন ভয় পায় নেই, কলে
 কোন পথ তৈরি করে নেওয়া সম্ভব,
 মনো, টিনা, পাখির মতো উড়বে উড়বে আশ্রয়
 পথ কবি কলার মতো বসন্তের পথ দেখলে শান্ত,
 আশ্রয় দেখলে পথের মতো কবি মতো সাজবে।
 স্মরণে স্মরণে স্মরণে স্মরণে স্মরণে তার নাম আলোর
 ঘোষণা খোলে, তখনই দেখা যায় চোখের স্মরণে
 সাজিয়ে রাখলে মুখ শান্তি পাবে যখন তিন-
 পাখির মতো উড়বে, উড়বে তখন তিন
 শিরের কলসের মতো মনে হয় শান্তির বসন
 ঘুটিয়ে না এলে সাজিয়ে রাখলে তিনের তিন
 মনে আসবে না, স্মরণে স্মরণে স্মরণে নাগরিকের
 আশ্রয়।

बनारसी आशाकुमार

प्र० "राष्ट्र का वीर बाँदा कि आर धाँडते राष्ट्र, तिनपाशाकुमार नरसिंकांथाय शिखर बनवव" (क) काय लेखा कोन कविताय अकृति, (ख) धाँडते की आर बाँदा राष्ट्र बनते की कोखानो हयैछे, (ग) नरसिंकांथाय शिखर बनवव बनते की कोख, (2+2+2)

उ० आलोच अन्तिम कि शक्ति चर्चापार्श्वयुक्त तिन पाशाकुमार कोन कविताय अकृति,

(ख) धाँडते कि आर बाँदा राष्ट्र बनते सक्रीय जीवन बँचे काय कोनो अर्थ हयै ना, धाँडते पाछि यमन असाध्य धाँडय वज जीवन यमन अर कोन आनन्द प्राप्त पावै ना, किं एमनि मज्जे जीवन सुखीन सकृते आवक होवै जीवनय सुत्रिकाय आनन्द उभनकि अर घयै ना, कवन हो जीवनय अर्थ कोन बँचि नई - आछे कोवल सतुनसतिवता,

(ग) तिन पाशाकुमार कोनय प्राकृतिक अर्थ अनिर्दितीय अकालय होनानि सुखय आलोच पाशाकुमार कोन सुख अचिन्तनिक होखल हने हयै यन वेर अचल नरसा कोरि होखल, अकालय होनानि आलोच उदासित हउयाय अहै अहै शिखर बनववकानिते पुन हयै उहि नरसिंकांथाय अर्थे सम्झनि,

प्र० "बनडूमिय उगावे कोन बनेडूमिय हयै सुखय सुखय सुखय सुखय सुखय कथा कय" (क) काय लेखा कोन कविताय अकृति, (ख) बनडूमिय उगावे बनेडूमिय हयै बनते की कोखानो हयैछे, (ग) अखाने सुखय अगावे की हने,

उ० - आलोच अन्तिम कि शक्ति चर्चापार्श्वयुक्त तिन

পাথরকে বোলে কবিতার অক্ষতি,
ঐ তিনপাঠকে বোলে, জগৎকে জগৎ অপরিচিত,
মনভীম্বর পাথর লেখক শুধু হলে কবিতার
রাজ্য - অর্থাৎ কল্যাণের রাজ্য - মনভীম্বর রাজ্য,
যা খালি হলে হেথা যায়না - তাই জন্ম মনভীম্বর
কল্যাণের হৃদয়স্থায়ী,

ঐ তিনপাঠকে বোলে জগৎ হই কল্যাণের
মনভীম্বর রাজ্য চলে কত মনভীম্বর, মনভীম্বর, মনভীম্বর
যা মনভীম্বর - তাই জগৎ লেখক হেথা নেই, যে কল্যাণের
কল্যাণের প্রত্যেক কবিতা যায়,

পুঃ পথ হারিয়ে যায় হারিয়ে, হারিয়ে পথ আছে;
কবিতা, কবিতা, কবিতা, পাথর মনভীম্বর কাছের -
কবিতার লেখা জগৎ কবিতার অক্ষতি, ঐ পথ
হারিয়ে যায় হারিয়ে মনভীম্বর কাছের, ঐ হারিয়ে
পথ আছে - মনভীম্বর বা কাছের (৩+২+২)

ঐ অক্ষতি অক্ষতি কবি শক্তি চর্চাপাঠকে তিনপাঠকে
বোলে কবিতার অক্ষতি,

ঐ তিনপাঠকে বোলে মনভীম্বর চলাই পাথর
চলিয়ে নেই, তাই চলাই পথ নিজেদের কাছের
নিতই হয়, পথ হারিয়ে মনভীম্বর মনভীম্বর
লেখক যায়,

ঐ মনভীম্বর পথ হারিয়ে আবার পাথর মনভীম্বর কাছের
নিতই হয়, কবিতা হেথা নিজেদের জগৎ
পথলেখক নেই যা যবে মনভীম্বর চলাই কবিতা,
তাই হারিয়ে পাথর লেখক নতুন পাথর
মনভীম্বর কাছের নিতই হয়,